एवियन इन्फ्लुएंजा से बचाव हेतु सुझाव

परिचय

एवियन इन्फ्लुएंजा, जिसे आमतौर पर 'बर्ड फ्लू' कहा जाता है, पक्षियों की एक संक्रामक बीमारी है, जो इन्फ्लुएंजा विषाणु के उपप्रकार "एच फाइव एन वन" के द्वारा होता है। यह विषाणु जलीय और प्रवासी पक्षियों में स्वाभाविक रूप से आश्रित रहता है एवं घरेलु पक्षियों एवं जानवरों के साथ मनुष्यों को भी प्रभावित करने में सक्षम होता है।

घरेलु पक्षियों जैसे मुर्गी, गीज, टर्की, गिनी फाउल, बटेर, कबूतर तथा अनेक वन्य पक्षी इस विषाणु से संक्रमित हो सकते हैं। बत्तख विषाणु के भरण-पोषण एवं संचरण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इस रोग का प्रसारण संक्रमित पशु-पक्षियों के नाक (नासिका), मुंह और आँखों के श्राव, दूषित हवा, उपकरण या सामग्री के माध्यम से होता है एवं इनके संपर्क से संवेदनशील पशु-पक्षी रोगग्रस्त हो जाते हैं। मुर्गियों में एवियन इन्फ्लुएंजा का संक्रमण एवं विस्तार शीघ्रता से होता है तथा अत्यधिक मृत्यु होती है। मुर्गियों में कलगी और वाटल का सूजन के साथ नीलापन होना, पैरों पर नीला धब्बा, दस्त, नाक से स्राव, अंडे के शेल का मुलायम या बदरूप होना, अंडा उत्पादन में कमी, खाँसना, छींकना, भूख एवं उत्साह की कमी, पैरों ओअर सुई की नोक के जैसा लाल धब्बा, पंखों का रुखा एवं अस्त-व्यस्त होना आदि प्रमुख लक्षण हैं।

प्रमुख सुझाव एवं निदान:

- प्रत्येक पोल्ट्री शेड/पेन के प्रवेश द्वार पर कीटाणुनाशक गड्ढा तैयार कर लें और उसमें 1.0 प्रतिशत पोटेशियम परमैगनेट का घोल भर दें। प्रवेश करने से पहले इसमें जुटे, चप्पल या पाँव को डुबोकर अन्दर जाना सुनिश्चित करें।
- फार्म में प्रवेश करने वाले वाहन के टायरों को चुना-युक्त पानी या ब्लीचिंग पाउडर से धोकर अन्दर आने दें।
- यथासंभव आगंतुकों के पोल्ट्री शेड में प्रवेश वर्जित करें क्योंकि दूषित कपडे और जुटे से वायरस फ़ैल सकता है।
- एक पोल्ट्री फार्म से दुसरे फार्म में आवाजाही रोकें।
- मुर्गियों की देखभाल करने वाले श्रमिक अपने हाथों को साबुन और पानी से अच्छी तरह धोएं।
- फार्म परिसर, उपकरणों और दूषित वातावरण को उपयुक्त कीटाणुशोधन/ रसायनों से साफ़ और कीटाणुरहित करें। ब्लीचिंग पाउडर (50 ग्राम/लीटर), चुना पाउडर (500 ग्राम/लीटर), सोडियम हाईपोक्लोराइट (2-3%), फिनोल (2%)।
- शिकारी एवं मुर्दाखोर पशु या पक्षी को संक्रमित पक्षियों के संपर्क में नहीं आने दें अन्यथा वे संक्रमण को फैला सकते है।
- जंगली पक्षियों को फार्म परिसर से दूर रखे क्योंकि वे इन्फ्लुएंजा विषाणु के प्राकृतिक वाहक होते हैं।
- यथासंभव आगंतुकों के पोल्ट्री शेड में प्रवेश वर्जित करें क्योंकि दूषित कपडे और जूते से वायरस फ़ैल सकता है।
- मुर्गियों को स्वच्छ फीड प्रदान करें तथा फीड को अच्छी तरह से भण्डारण करें जिससे वह पक्षिओं, कीड़ों और चूहों से बचे रहें।
- जब तक आवश्यक न हो, मुर्गियों, बत्तखों या अन्य पक्षियों के संपर्क से बचें।
- कच्चे या अधपके मांस तथा अंडे को सेवन में नहीं लायें।
- एवियन इन्फ्लुएंजा के प्रकोप की सुचना स्थानीय पशु चिकित्सक को यथाशीघ्र दें तथा उनके द्वारा बताए गए सुझावों पर सावधानीपूर्वक अमल करें।

एवियन इन्फ्लुएंजा के प्रकोप की सूचना स्थानीय पशुचिकित्सालय को यथाशीघ्र दें।

पशुपालन एवं मत्स्य संसाधन विभाग के कॉल सेंटर नंबर 0612-2230942 पर संपर्क करें

-Issued by Bihar Animal Sciences University, Patna in public Interest.